नारी जागरण में महात्मा गांधी की भूमिका

शीला देवी
हिसार हरियाणा

पूजा में शक्ति का आह्वान एक शाश्वत सत्य है। यह भी सत्य है कि भारतीय समाज धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं में महिलाओं को शक्ति माना जाता रहा और यह भी सत्य है कि वैदिक युग से लेकर आज तक कोई भी धार्मिक कार्यक्रम बिना महिलाओं की उपस्थित के सम्भव नहीं हुआ। बात साफ है देश की विशेष रूप में भारत की राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक गतिविधियों में महिलाएं सक्रिय भूमिका निभाती रही हैं। वर्तमान राजनीति से पूर्व थोड़ा पीछे गांधी युग में जा कर अन्वेषण करें तो निश्चित रूप से बात साफ हो जाएगी कि भारती स्वतंत्रता संग्राम में सामंजस्य इसलिए हो सका क्योंकि ''भारतीय महिलाओं ने गांधी जी को एक संत–देवता एवं स्वतंत्रता आंदोलन को एक धर्मयुद्व माना था।''[1]

गांधी जी की व्यक्तिगत छवि संत महात्मा की होने के कारण इनके नेतृत्व में शुरू हुए स्वतंत्रता आंदोलन में राजनीतिक–धार्मिक छवि बनी। देश भक्ति को धर्म माना गया, देश को देवी मां की संज्ञा दी गई, देवी मां की रक्षा के लिए बड़े–बड़े त्याग भी छोटे थे। ''महात्मा गांधी ने इस आन्दोलन और बलिदान की प्रक्रिया को अहिंसात्मक, धैर्य, त्याग और स्वच्छ बनाया। मूलतः अहिंसात्मक और त्यागमय गुण महिला आधारित माने जाते हैं।''[2] गांधी जी इस आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी के पूर्ण पक्षधर थे। वे महिलाओं की सभाओं में भाषण करते, आन्दोलन में इनकी भागीदारी को सुनिश्चित करते, उनको प्रेरित करते और उनकी सुप्त हिम्मत और शक्ति को जगाने का कार्य करते। वे महिलाओं को सीता, द्रोपदी और दमयंती की तरह सात्विक दृढ़ और नियंत्रित होना चाहिए तभी वे देश और समाज को अन्याय तथा अविश्वास से बचा सकेंगी। साथ ही अपने अधिकारों के प्रति सचेत तथा स्वतंत्रता के प्रति जागृत हो सकेंगी। गांधी जी सामाजिक बराबरी का दर्जा कभी यह नहीं था कि महिलाएं से सब काम करें जो पुरूष कर रहे है, वे तो ऐसा आदर्श स्थापित करना चाहते थे जो ''स्त्री और पुरूषों को अपने स्वभाव एवं क्षमता के अनुसार एक दूसरे को सहयोग दें।''[3] महिलाओं को गांधी जी ने स्वदेशी व्रत लेने को कहा, वे सारी वस्तुएं त्यागने को कहा जो विदेशी मिलों में बनी है तथा सूत और खादी की परम्परा को आगे बढ़ाने को कहा। खादी द्वारा महात्मा स्त्रियों को श्रम प्रक्रिया द्वारा समाज और आन्दोलन को मुख्य धारा में लाना चाहते थे। वे अक्सर कहते थे कि भारत इसलिए गरीब हो गया क्योंकि उसने स्वदेशी हस्तकलाओं का परित्याग कर विदेशी ढ़ांचे को अपना लिया।

महिलाएं गृह निर्माता के साथ–साथ राष्ट्र निर्माता भी है और राष्ट्र पोषक भी है। भारत में पुनरूत्थान उनकी भूमिका सराहनीय है, लेकिन अशिक्षा के कारण वे राष्ट्र विकास की अपनी भूमिका से अनजान है। अतः शिक्षित होना भी उनके लिए अपरिहार्य है। वे घर रहकर भी खादी उद्योग चला सकती हैं। यह

भी एक देशभक्ति के आन्दोलन का भाग ही है। इसलिए राष्ट्र आन्दोलन में जुलूस निकालना जरूरी तो नही।

गांधी जी के व्यवहार की विशेषता थी कि भारतीय जन मानस और महिलाएँ उनसे खूब प्रभावित हुई। इतना ही नहीं उन्होंने ''महिलाओं के पुरूष संरक्षकों, पति, पुत्र, भाईयों का भी विश्वास प्राप्त कर लिया।''[4] उनके नैतिक आदर्श ने परिवार की चिंताओं को हरण कर लिया था। मुम्बई में स्त्रियों ने राष्ट्रीय स्त्री सभा का गठन उनके इसी प्रयास का प्रतिफलन था। यह पहला महिला संगठन था जो पुरूषों के सहयोग के बिना चलाया जाता था। इसके प्रमुख उद्देश्यों मूं स्वराज प्राप्ति एक था। स्वराज को शांति पूर्ण तरीके से प्राप्त करने के लिए खादी व सूत कातना शामिल था। राष्ट्रीय स्त्री सभा की सदस्याएं पूरे मुम्बई में खादी के प्रचार प्रसार में लगी थी। यह पूर्णतः स्वावलंबी संगठन था। ''फलतः 1921 के असहयोग आन्दोलन में 144 स्त्रियों ने भाग लिया जिसकं 131 कार्यकर्ता राष्ट्रीय स्त्री सभा की थी ओर 13 स्वैच्छिक कार्यकर्ता थी।''[5] इससे महिलाओं के मन में अपनी उपलबि के प्रति विश्वास जागा और चूंकि यह आन्दोलन गांधी जी के नेतृत्व में था इसलिए उनके संरक्षकों के मन गांधी जी के प्रति विश्वास जगा।

महात्मा गांधी ने महिला अधिकारों को राष्ट्रीयता से जोड़ा। इससे महिलाओं की स्वराज और शक्ति की धारण स्पष्ट हो गई, ''स्वराज का मतलब अपना राज और स्वाधीनता का मतलब ताकत व शक्ति प्रयोग अपने आवश्यकता की पूर्ति के लिए संगत रहेगा कि हम यह संज्ञान में रखें कि बराबरी अर्थ तुलना नहीं, क्षमता का है। स्त्री एवं पुरूषों में जैविक असमानता होते हुए भी इच्छा, अकांक्षा, स्तर और सोच में बहुत अंतर नहीं होता। हां क्षमता अवश्य भिन्न होती है। ''वस्तुतः समानता और क्षमता पर पुरूष के बराबर से ध्यान रखना चाहिए।''[6]

डांडी यात्रा के बाद महिलाओं को आन्दोलन में महिलाओं को पूर्णत शामिल कर लिया सामाजिक तौर पर उनको परिवार के पोषण के स्तम्भ के रूप में स्वीकार किया जाने लगा नर्स शिक्षिका, भोजन के संबंध उनकी पहचान को स्वीकृति मिल गई, खाद्य उत्पादन और खादी उत्पादन महिलाओं का पयार्य बन गया।

सरला देवी चट्टोपाध्याय और सरोजनी नायडू के साथ एनी बेसैंट का प्रभाव खूब समाज की महिलाओं को प्रभावित कर रहा था। अब तक गांधी जी अपने भाषणों के माध्यम से जमकर महिलाओं को जागरूक कर रहे थे, वे लगातार इस बात पर जौर देते रहे कि महिलाओं को जमीन पर आना चाहिए और समाज तथा देश के पुनः निर्माण और कार्यों में अपना जीवन लगाना चाहिए।

सविनय अवज्ञा आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा कर और राजस्व का बहिष्कार करना था। इसकी प्रतिक्रिया में समान, उपकरण और कई बार जमीन तक जब्त करना शुरू कर दिया था, जिसकी बाद में नीलामी की जाती थी, इस नीलामी में महिलाएं बहुत सक्रिय नजर आ रही थी। इस प्रकार प्रैस भी महिलाओं से संबंधी खबरों को स्थान देने लग गई थी। यह बहुत बड़ी बात थी और यह गांधी के जागरण का परिणाम था।

जहाँ एक ओर महिलाएँ सविनय अवज्ञा आंदोलन और असहयोग आंदोलनों में भाग ले रही थी वहीं काफी संस्था में महिला क्रांतिकारी स्वरूप भी धारण कर चुकी थी। इनके अधिकतर छात्राएं थी। उनकी क्रांतिकारी की भूमिका में क्रांतिकारीयों को घर में पनाह देना,

प्रचार करना, संगठन संभालना , पैसा एकत्र करना, हथियार छिपा कर रखना और बम्ब बनाना था। धीरे–धीरे वे प्रत्यक्ष गतिविधियों का हिस्सा बन कौर ग्रुप में शामिल हो गई। ''1939 में महिला कांग्रेस का गठन इसी महात्मा गांधी के नेतृत्व का फलन था।''[7]

स्वाधीनता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी महात्मा गांधी के प्रभाव से हुई। 1920 के दशक तक गांधी जी एक गाथा पुरूष बन चुके थे। सब उन्हें मुक्ति के दूत के रूप में देखने लग गए थे। वे जहाँ जहाँ जाते, भीड़–भीड़ हो जाती थी उनके नेतृत्व में महिलाओं ने वह सब कुछ सीख लिया जिससे वे अब तक अनजान थी।

गांधी जी अक्सर कहा करते थे ''नारी त्याग का दूसरा रूप है।''[8] उन्होंने कहा कि महिलाओं स वह सब कुछ सीखा जा सकता है जिसकी आज समाज को जरूरत है। मधु किश्वर जी उनके इस योगदान को लिखते हैं, ''गांधी जी ने महिलाओं के सार्वजनिक जीवन को एक नया आत्म सम्मान दिया, नया विकास दिया, नई आत्म छवि दी। इससे वे निष्क्रिय वस्तु से सक्रिय नागरिक बनी।'' महात्मा गांधी ने समाज में नारी को मानवीय स्वरूप प्रदान करने के लिए संघर्ष किया, उनके वस्तु पने वाले नजरिये से मुक्ति दिलाई, उनको प्रबुद्ध नागरिक एवं समाज के भाग्य निर्माता का दर्जा दिलाया। मीना मजूमदार के शब्दों में, ''गांधी जी ने महिला मुद्दों को समर्थन दिलवाया।''

गांधी जी महिलाओं में कुलिनता सतीत्व को सबसे प्रभावी गुण मानते थे। उन्होंने हरिजन 1921 में स्वंय लिखा, ''पुरूषों की नजरों में महिलाएँ कमजोर नहीं है, वरन दोनों लिंगों से ज्यादा श्रेष्ठ इसलिए हैं कि वे त्याग, खामोश, नम्रता, विश्वास और ज्ञान की साक्षात प्रतिमा है।'' वे समाज में अच्छाई सुनती हैं, चरखा और खादी अपनाती हैं, आत्मा त्याग और पीड़ा के रास्ते पर चलती हैं। इसिलिए वे ज्यादा शक्तिशाली हैं। यही कारण था कि वैदिक युग से ही भारतीय समाज में स्त्री को देवी और माँ का दर्जा केवल एक मिथक नहीं था। बल्कि उनकी सहभागिता का स्वरूप था। आत्म त्याग, परोपकारिता, सेवा, निष्ठता, धर्म परायण आदि गुण भारतीय संस्कृति के आधार हैं। इन श्रेष्ठ गुणों की खान स्त्री चरित्र है। इस अध्यात्मिक कसौटी राष्ट्रीयता को शामिल करने में महात्मा गांधी के योगदान को भुलाना नहीं जा सकता। अब उनके लिए आंदोलनों में भाग लेना आसान हो गया था। दर असल स्वाधीन आंदोलन में उनकी भागीदारी इतनी व्यवस्थित थी कि इससे उनके घरेलू जीवन में कोई बदलाव नहीं आया, उल्टा समाज सुधार के परिणाम आए। ''गांधी जी की आदर्श स्त्री की संकल्पना स्वतंत्र जीवन जीने वाले आधुनिक स्त्री की तो नहीं थी। वे तो स्त्री को त्याग और पीड़ा की प्रतिमा मानते थे और सार्वजनिक जीवन में उसका काम अबाधित महत्वाकांक्षा और सम्पत्ति अर्जन की तुलना में धार्मिक स्वभाव के अनुकुल होना चाहिए।''[9] इस उदबोधन से महिला सामाजिक रूप में सक्षम हुइ उसके विनयशील गुणों को सराहा गया। उसकी विनम्रता और शालीनता का आदर्श स्थापित हुआ। उसका जीवन सुरक्षित एवं सम्मानित हुआ। देश भक्ति को धर्म में समाहित कर देने से महिलाओं के स्वाधीन आंदोलन का योगदान सांस्कृतिक ढ़ाँचे में सटीक बैठने वाला बन गया।

महिलाओं के स्वाधीन आंदोलन की प्रक्रिया इतनी नियोजित थी कि समाज में उनके योगदान की सराहना की गई और स्वीधनता के साथ–साथ नारी की अस्मिता और क्षमता को भी बल मिला। निश्चित रूप से

आधुनिक स्त्री की कल्पना का आधार गांधीवाद ही बना अन्यथा नारी मध्य युगीन पतन का दंश झेलते–झेलते अपनी पहचान खो देती। सती, जौहर, पर्दा, देवदासी से इन्दिरा, ऐश्वर्या, सानिया तक का सफर तय करते हुए भारतीय स्त्री महात्मा गांधी की आभारी रहेगी।

संदर्भ सूची

1. गांधी का मूल्य सिद्वांत, विजेन्द्र सिंह, पृष्ठ 32
2. गांधी का मूल्य सिद्वांत, विजेन्द्र सिंह, पृष्ठ 62
3. गांधी का मूल्य सिद्वांत, विजेन्द्र सिंह, पृष्ठ 63
4. सत्य के मेरे प्रयोग, गांधी, पृष्ठ 33
5. यंग इंडिया, जून 1936
6. यंग इंडिया, अप्रैल 1930
7. हरिजन, नवम्बर 1924
8. सत्य के मेरे प्रयोग, गांधी, पृष्ठ 47
9. मूल्य की परिकल्पना, फोर्ड ;1932द्ध, 42

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com